दलित साहित्य लेखन और हिंदी लेखन विचार

MEENAKSHI
Research Scholar
DEPARTMENT OF HINDI
OPJS UNIVERSITY

DR DIGVIJAY KUMAR SHARMA
Professor
DEPARTMENT OF HINDI
OPJS UNIVERSITY

जब दलित साहित्य की बात आती है तो दलित और गैर-दलित लेखक इस मामले में आज भी एक-दूसरे के विरोधी हैं। क्योंकि "जाके पांव न फटे बिवाई, सो क्या जाने पीर पराई " दलित लेखकों के अनुसार, केवल दलित ही दलितों के कष्टों की व्याख्या कर सकते हैं, जो इस बात से असहमत हैं कि बीज को चीरे बिना भी, इसकी पीड़ा और दर्द और दर्द को महसूस किया जा सकता है और करुणापूर्वक व्यक्त किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में, आत्म-साक्षात्कार और करुणा के बीच का अंतर आज भी मौजूद है। प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक डॉ. नामवर सिंह ने सहमति व्यक्त की है कि लोकतंत्र को "लोगों का, लोगों द्वारा और लोगों के लिए" के रूप में परिभाषित किया गया है। दलित साहित्य को दलितों द्वारा, दलितों के बारे में, और दलितों के लिए, और पूरी तरह से अम्बेडकरवाद से प्रेरित होने के रूप में परिभाषित किया गया है। यह मार्क्सवाद या गांधीवाद के साथ संयुक्त नहीं है।

उनका मत है कि दलित साहित्य को देखने के दो तरीके हैं। पहला है दलितों द्वारा दलितों के लिए रचित और दलितों द्वारा लिखा गया साहित्य, जबकि दूसरा है दलितों के बारे में गैर-दलित लेखकों द्वारा रचित साहित्य। प्रबंधक पांडेय का कहना है कि गैर-दलित लेखक करुणा और सहानुभूति की सहायता से दलितों पर उत्कृष्ट रचनाएँ कर सकते हैं, लेकिन प्रामाणिक दलित साहित्य वह है जो दलितों द्वारा अपने या उच्च जाति समूह के बारे में लिखा जाता है क्योंकि ऐसे कार्य करुणा और सहानुभूति से भरे होते हैं। नहीं, लेकिन यह आत्म-जागरूकता का परिणाम है। शायद इसीलिए प्रसिद्ध दलित लेखक मोहनदास नैमिशराय का मत है कि दलित साहित्य की रचना करने में केवल दलित ही सक्षम हैं; उन्होंने लापरवाह उपेक्षा से चिह्नित जीवन जिया है, इस प्रकार यह उनकी कल्पना का उत्पाद नहीं है। दलित साहित्य क्रोध और क्रोध की भावनाओं को जगाता है।

अब भी जातिवादी ताकतें हमें वंचितों की श्रेणी में बनाए रखना चाहती हैं, इसलिए इसे कला के धोखे की जरूरत नहीं है। जागरूकता का उगता सूरज दलित साहित्य की एक परिभाषित विशेषता है। हमारे उद्धार का वचन दिया जाएगा। दलित साहित्य घायल व्यक्ति का रिकॉर्ड है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का दावा है कि दलित लेखन उन लोगों के दर्द को दर्शाता है जिन्होंने अस्पृश्यता के सबसे बुरे प्रभावों को सहन किया है। वाल्मीकि के अनुसार, जो दलित समुदाय में चार दिन बिताता है, वह वर्ण व्यवस्था के महत्व को समझ सकता है। उसके मूल्य सभी बदलेंगे, जैसा कि उसकी दृष्टि होगी। इसी तरह की बातें कंवल भारती द्वारा की जाती हैं, जो इस विचार को साझा करते हैं कि दलित साहित्य की रचना गाँव के बाहर के अछूतों द्वारा की जाती है, जिनके आचरण के "नियम" तय करते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।

बाबासाहेब अम्बेडकर की विश्वदृष्टि, जो इनकार, नकार और विद्रोह की भावना से व्याप्त है, ने दलित लेखन में नए दृष्टिकोण को प्रेरित किया है। ताराचंद खांडेकर का दावा है कि दलित साहित्य शब्दप्रमण्य, ग्रंथों, आत्मा, ईश्वर और उन पर स्थापित सभी नैतिकता और धर्म का खंडन करता है।

हिंदी दलित साहित्य में मराठी या हिंदी मूल है या नहीं, इस पर बहुत गलतफहमी हुई है। कंवल भारती जैसे लेखकों के अनुसार, जो इसे हिंदी साहित्य के प्रारंभिक वर्षों से जोड़ते हैं, आदर्श कवि सरहपद को हिंदी का पहला कवि माना जाता है। हिन्दी साहित्य की शुरुआत इन्हीं से होती है। हालाँकि, यह दलित लेखन का पहला दौर है। प्रतिक्रांतिकारी ज्वार तब हिंदी की धारा बन गई जो पहले बहती थी। पुरातनता के उत्कृष्ट कवि वे थे जिन्होंने बुद्ध द्वारा अधिनियमित जाति व्यवस्था और सामाजिक सुधारों के खिलाफ क्रांति की। उनमें से 37 शूद्र सिद्ध थे। रामचंद्र शुक्ल के बयान से तुलना करने पर कंवल भारती के बयानों में सच्चाई देखी जा सकती है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में शुक्लजी लिखते हैं, "84 सिद्धों में से, कई मछुआरे, चमार, धोबी, गुंबद, कहार, लकड़हारे, दर्जी और शूद्र कहे जाने वाले कई व्यक्ति थे।" परिणामस्वरूप, आप ही थे जिन्होंने जाति व्यवस्था की आलोचना की। राहुल सांकृत्यायन की जीवनी "हिंदी काव्य धारा" में 84 सिद्धों की जातियाँ और व्यवसाय भी प्रकट होते हैं। इनमें 18 शूद्र, 2 तांतव, 1 धोबी, 1 लोहार, 1 लकड़हारा, 1 डोम, 1 चिदिमार, 1 कहार, 1 दर्जी, 1 चमार और 4 महिलाएं हैं। हालांकि, उनके अलावा, अन्य सिद्ध उन्नत जातियों से हैं, जिनमें से कुछ वर्ण व्यवस्था के खिलाफ हैं।

कंवल भारती के अनुसार सरहपद एक ब्राह्मण थे जिन्होंने जाति व्यवस्था के खिलाफ जोरदार विद्रोह किया। उसने वर्ण के बाहर की एक निचली जाति की महिला से विवाह किया था जो तीर उत्पन्न करती थी। इसी वजह से उसका नाम सारा था। दलित लेखन का उद्देश्य वर्ण व्यवस्था को उखाड़ फेंकना और समानता का निर्माण करना है और पुरातनता के प्रतिभाशाली कवि इस जागरूकता के वाहक हैं। ब्राह्मण साहित्य की परंपरा, जिसका मौलिक आवेग वर्ण व्यवस्था को बनाए रखना था, सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक न्याय की इस प्राचीन धारा के साथ-साथ अस्तित्व में आई। इस युग के बाद भले ही कबीर और अन्य दलित संत कवियों ने जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता के खिलाफ अपने विद्रोह को तेज कर दिया, लेकिन प्रतिक्रांति की धारा ने शुरुआती समय में भाप नहीं ली। फिर भी, ब्राह्मणों ने इस दौरान प्रतिक्रांति की धारा स्थापित करने का प्रयास किया।

इसके अतिरिक्त, रामानंद के संबंध में साहित्य में कुछ गलतफहमी है कि वह जाति में विश्वास नहीं करते थे, जो कि असत्य है। हालांकि, वर्णाश्रम प्रणाली के साथ नहीं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में शुक्ल जी ने कहा है कि भक्ति मार्ग पर रामानंद जी की दरियादिली का यह अर्थ कदापि नहीं था, बावजूद इसके कि कुछ लोग क्या मानते हैं। रामानन्द जी वर्णाश्रम के कभी विरोधी नहीं थे। वे समुदाय के लिए वर्ण और आश्रम प्रणालियों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न जिम्मेदारियों की योजना के लिए सहमत हुए। उन्होंने केवल पूजा के संदर्भ में सभी लोगों की समानता को स्वीकार किया।

शायद इसी वजह से दलित लेखक रामानंद के कबीर और रैदास के गुरु होने के दावे को खारिज करते हैं: अगर दोनों के बीच वैचारिक अनुकूलता नहीं होती तो शिक्षक-शिष्य का रिश्ता कैसे हो सकता था? तुलसी दास जैसे ब्राह्मण कवियों की काव्य धारा, जिसे जाति व्यवस्था के समर्थन की धारा और ब्राह्मणवाद का उदय भी कहा जा सकता है, कबीर और जैसे कवियों द्वारा व्यक्त जाति और जाति व्यवस्था के प्रतिरोध की धारा के समानांतर चलती है। शायद यही कारण है कि शिवकुमार मिश्र जैसे उदारवादी लेखक भी सद्गुण के सामाजिक प्रसार को कम या न के बराबर समझते हैं। पूरी सगुण धारा में निचली जाति के कवि नहीं हैं क्योंकि उनमें से कोई भी प्रमुख सामाजिक व्यवस्था को चुनौती देने का प्रयास नहीं करता है। आखिर कोई अछूत राम और कृष्ण के दरबार में कैसे शामिल हो सकता है?

कवियों का लक्ष्य विलासिता से घिरे राजाओं और महाराजाओं को खुश करना था, इसलिए यह प्रक्रिया व्यावहारिक रूप से अनुष्ठान के प्रारंभ समय तक चलती है। सरस्वती के जून 1901 के अंक में "नायिका भेद" शीर्षक से एक अंश में, महावीर प्रसाद द्विवेदी ने लिखा, "राजशाही प्राप्त करने में प्रतीक्षा करें, सभी प्रकार की नायिकाओं के स्वाद का स्वाद लेने के लिए सम्राटों के लिए कवि की देरी नहीं है। कवियों का विवरण 10 वर्ष की आयु में अज्ञात यौवन से 50 वर्ष की आयु में परिपक्वता तक के सूक्ष्म परिवर्तनों ने उन्हें

संतुष्ट नहीं किया; उन्होंने अपने इशारों, भोगों आदि की पूरी दिनचर्या का भी वर्णन किया। वे यह निर्धारित करते थे कि दुष्टों, नौ, धोबी आदि में से कौन शरारत में चतुर होने के लिए दूत होना चाहिए और इस काम के लिए सबसे योग्य कौन है।

सामाजिक असमानता, जाति, जाति, छुआछूत, ऊँच-नीच, का मुद्दा स्पष्ट रूप से कवियों के काम के केंद्र में रहने का इरादा नहीं था। यह सच है कि भारतेंदु काल को "क्रांतिकारी" और "क्रांतिकारी" जैसे शब्दों से हिंदी में संदर्भित किया गया था, लेकिन अगर हम वीर भारत तलवार के "युद्ध के रस्साकशी" को ध्यान में रखते हैं, तो पुनर्जागरण हिंदी क्षेत्र में नहीं आया था। उन्होंने पूरी अवधि को हिंदुओं और मुसलमानों के बीच संघर्ष, हिंदी और उर्दू और गाय संरक्षण तक सीमित कर दिया है। तो दलित साहित्य का मुद्दा कहां से आता है? इतना तो तय है कि हीरा डोम की भोजपुरी कविता "अछूत की शिकायत" 1914 में महावीर प्रसाद द्विवेदी कालीन "सरस्वती" में छपी थी। लेकिन उसके बाद अब इसमें दलित जागरूकता का कोई प्रमाण नहीं है।

द्विवेदी जी ने पं. श्रीराम शर्मा ने 21 सितंबर, 1933 को लिखे पत्र में "सरस्वती" छोड़ने के कई साल बाद, "निराशों, कोरी, चमारों आदि की विशेषताओं का वर्णन करके बहुत कुछ लिखने और भावना में सुधार करने के लिए। हालांकि कई लेखक सम्मोहक पात्रों का निर्माण करते हैं। , वंचितों और वंचितों के लिए कभी किसी ने जीवन-योजना नहीं बनाई। यहां तक कि ब्रिटिश द्वीपों में कीड़े, जानवरों और पक्षियों के जीवन का भी पता चलता है। यह अज्ञात है कि क्या किसी कोरी या चमार की जीवनी द्विवेदी जी और दोनों द्वारा लिखी गई थी शर्मा जी।

जाति व्यवस्था और सामाजिक उत्पीड़न को चुनौती देने में असमर्थता के कारण, दलित किसी भी कवि को, यहाँ तक कि गूढ़ कवियों में भी, अपना कवि नहीं मानते हैं। वे सहस्राब्दियों से मौजूद टूटे हुए सामाजिक ढांचे से पूर्वाग्रह के उन्मूलन पर चर्चा करते हैं, लेकिन वे सामाजिक परिवर्तन पर चर्चा नहीं करते हैं। निराला को प्रसाद, पंत, महादेवी और निराला के साथ एक प्रगतिशील कवि माना जाता है, हालांकि दलित लेखक उन्हें दलित कवि के रूप में वर्गीकृत नहीं करते हैं।

उनका तर्क है कि निराला एक वेदांती थे जो शंकर के अद्वैत दर्शन से प्रेरित थे और तुलसीदास उनके पसंदीदा कवि थे। विवेकानंद, जिन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था को बढ़ावा दिया, और रामकृष्ण परमहंस दोनों ही निराला की दृष्टि में मूर्ति थे। दलित लेखकों ने इसे वेदांत से तुलना करके स्वीकार किया है। दलित लेखकों के अनुसार, यदि वे ब्राह्मण नहीं होते, तो उन्हें एक महान कवि नहीं माना जाता। निरंकार देव सेवक एक कवि थे जो निराला में रहते थे जब कंवल भारती ने उनके बारे में लिखा था। कंवल भारती ने दावा किया कि निरंकार देव सेवक ने सबसे क्रांतिकारी और प्रगतिशील कविता की रचना की थी, फिर भी न तो हिंदी समीक्षकों और न ही हिंदी साहित्य के इतिहास में निरंकार देव सेवक का उल्लेख है। सेवक जी की अपनी मान्यताओं के अनुसार दो दोषों के कारण इतिहासकारों ने उनकी उपेक्षा की।

वे विशेष रूप से असामान्य नहीं थे, लेकिन ब्राह्मण कम्युनिस्ट थे। निराला पर 1922 में लाला संतराम द्वारा पंजाब में "जाट-पंत तोड़क मंडल" के निर्माण का विरोध करने का भी आरोप है, जिसे संतराम वर्णाश्रम को चुनौती देते थे। संतराम का समर्थन करने के बजाय, निराला पर शंकराचार्य को बुलाने और मंडल का विरोध करने का आरोप है। संतराम की उनकी आलोचना की कड़ी आलोचना की गई थी। इसके अतिरिक्त, निराला ने "वर्णाश्रम धर्म की वर्तमान स्थिति" पर प्रकाशित एक लंबे पत्र में वर्ण व्यवस्था के पक्ष में एक मजबूत रुख अपनाया।

इसके अतिरिक्त, दलितों के अनुसार, निराला की सबसे प्रिय कविताएँ "राम की शक्ति पूजा" और "तुलसीदास" हैं, जो दोनों वर्णाश्रम और ब्राह्मणवाद के प्रबल अनुयायी हैं और इसलिए दलित जागरूकता के दृष्टिकोण से उनका कोई महत्व नहीं है। क्योंकि उनका मानना है कि वर्णाश्रम के पक्षधर व्यक्ति ब्राह्मणवाद के समर्थक हैं, निराला के "ब्रेकिंग स्टोन्स," "स्टेप्स क्किकली," "चतुरी चमार," और "कुली भट" निस्संदेह दलितों की कविता के रूप में माने जाने के लिए तैयार नहीं हैं।

वह दलित चेतना के वाहक कैसे हैं? प्रेमचंद निराला की तरह प्रेमचंद को अपना नहीं मानते। उनका दृढ़ विश्वास है कि वह दलित जीवन के बारे में लिखने वाले और अपने कार्यों में सामाजिक पूर्वाग्रह और अस्पृश्यता के मुद्दों को संबोधित करने वाले पहले कहानीकार थे। हालांकि, वे इस बात से असहमत हैं कि वह अंबेडकर की दलित चेतना से संबंधित हैं और इसके बजाय दलित होने की पीड़ा को व्यक्त करने के लिए गांधीवादी हरिजन उत्थान को श्रेय देते हैं। उनका लेखन इस प्रकार आत्म-अनुभव के बजाय सहानुभूति पर केंद्रित है। अब, दलित लेखकों ने प्रेमचंद के कई कार्यों को पुनर्जीवित किया है, जिनमें उनके उपन्यास "रंगभूमि," "सद्गति," और "कफन" शामिल हैं। उनका कहना है कि प्रेमचंद के दिल के पात्रों में दलित पात्रों में मौजूद क्रोध की कमी है। डॉ. धर्मवीर ने अपना नवीनतम काम, सामंत का मुंशी: प्रेमचंद, जो कुछ बचा था, उसे समाप्त कर दिया। दरअसल, धर्मवीर के अनुसार प्रेमचंद के चर्चित उपन्यास "कफन" में सच्चाई के "एक-नौ हिस्से" ही सामने आए हैं, जो चमारों के बारे में है।

प्रेमचंद के पेट में कफन का "आठ-बाय-नौ खंड" है जो अभी तक सामने नहीं आया है। उस पूरे हिमखंड का खुलासा साहित्य के दलित आकलन से ही होगा। यदि प्रेमचंद ने इस कहानी की अंतिम पंक्ति में दलित जीवन की वास्तविकता को प्रकट किया होता - अर्थात्, बुधिया स्थानीय जमींदार की दासी को ले जा रहा था तो पूरी कथा एक बार फिर स्पष्ट हो गई होती। खुले में उसने बुधिया का अपमान किया था। तब सब कुछ समझ में आ जाएगा और शब्द प्रकाश की तरह चमक उठेंगे।

धर्मवीर ने जो कुछ भी उल्लेख किया है वह सच हो सकता है, लेकिन क्या उसे उस पाठ में कुछ जोड़ना चाहिए जो पहले से नहीं है? क्या उन्हें अपनी ओर से इसे जोड़ने का अधिकार है यदि उन्हें स्वयं इसे जोड़ने का अधिकार है? यदि ऐसा है, तो समीक्षा स्वीकार्य है; अगर ऐसा नहीं है, तो इसे अत्यधिक जोश दिखाने के रूप में देखा जाएगा। हालाँकि, धर्मावरी के अनुसार, "कफ़न" छोड़ना आवश्यक होने के दो कारण हैं: पहला, प्रेमचंद ने इस कथा में "चमार" शब्द का इस्तेमाल किया, और दूसरा, प्रेमचंद ने घीसू और माधव के कार्यों के लिए एक स्पष्टीकरण प्रदान किया।

यदि उन्होंने व्याख्या नहीं की होती तो समीक्षा को लेख से हटाने की आवश्यकता नहीं होती। इसके अलावा, धर्मवीर ने अन्य हिंदुओं से व्यभिचार स्वीकार करने के साथ-साथ प्रेमचंद की मालकिन को अपनी पत्नी से अलग रखने, उसे यौन अपराधी घोषित करने और उसे अम्बेडकर की परीक्षा के लिए पूरी तरह से असफल उम्मीदवार के रूप में संदर्भित करने का आग्रह किया है। डॉ. नामवर सिंह ने इस पुस्तक को वितरित करने से इनकार कर दिया था क्योंकि इसमें कई समान खंड थे, और अब धर्मवीर की सभी कोणों से आलोचना हो रही है, भले ही सबसे प्रसिद्ध हिंदी लेखक को दोषी ठहराया गया हो।

अर्थात् सिद्ध साहित्य के अलावा, समकालीन युग में केवल निराला और प्रेमचंद, निर्गुण संतों में कबीर और रैदास के बाद, दलित जागरूकता का प्रदर्शन करते हैं, जब सभी हिंदी लेखन के इतिहास की संक्षिप्त जांच की जाती है। एक और मुद्दा यह है कि दलित लेखकों द्वारा उन्हें दलित लेखक नहीं माना जाता है क्योंकि वे यह स्वीकार करने में असमर्थ हैं कि एक गैर-दलित लेखक भी दलित निबंध का निर्माण करने में सक्षम है। हिन्दी में वर्तमान दलित वाद-विवाद उन्नत वर्ग के लेखकों ने हिन्दी के 20वीं शताब्दी के अंतिम दशक में इसकी आलोचना करना शुरू किया, उसी समय जब दलित साहित्य और विचार की चर्चा शुरू हो रही थी।

मंच पर आते हुए श्री काशीनाथ सिंह ने कहा, "दलितों के बारे में लिखने के लिए आपका दलित होना जरूरी नहीं है। हालांकि, दलित साहित्य नहीं है। ओम प्रकाश वाल्मीकि ने जवाब दिया - "वाल्मीकि और व्यास द्वारा ब्राह्मणवाद की चर्चा दलितों के संदर्भ में की गई है। दलित साहित्य लिखने वाला कोई दलित होते हुए भी ब्राह्मणवाद पर चर्चा कैसे कर सकता है? इसके बाद, फॉरवर्ड लेखकों ने दावा किया कि फोर्ड फाउंडेशन फंडिंग कर रहा है। दलित लेखन और पूछा कि क्या सवर्ण लेखक दलित साहित्य के साथ-साथ दलित साहित्य भी बना सकते हैं।डॉ अम्बेडकर "अंग्रेजों के बिठू" और देशद्रोही थे।

डॉ. रामदरश मिश्रा और अन्य लेखकों ने यहां तक दावा किया है कि "लिखित रूप में, आरक्षण अप्रभावी हैं। दलित लेखक आध्यात्मिक अभ्यास में संलग्न नहीं होते हैं, जो दलित लेखन को रचनात्मक बनने से रोकता है।" डॉ. नामवर सिंह के अनुसार, "मूल पौधा मराठी है।" हिन्दी को अब उसकी कलम में रोप दिया जा रहा है। इसके बाद आत्म-साक्षात्कार बनाम करुणा पर बहस छिड़ गई, और कहा गया कि दलित साहित्य के संदर्भ में "आत्म-साक्षात्कार और सहानुभूति" पर चर्चा करना व्यर्थ है। दलित साहित्य कोई भी लिख सकता है। इसका समर्थन करने के लिए, दूधनाथ सिंह और अखिलेश ने "निष्कासन" और "ग्रान" कहानियां लिखीं ताकि यह प्रदर्शित किया जा सके कि वे भी दलित कहानियां बना सकते हैं। हालांकि, डॉ. एन. सिंह ने दोनों कहानियों का मूल्यांकन किया और कहा कि उनमें से कोई भी दलित साहित्य के स्तर को पार नहीं कर पाया।

यद्यपि दलित साहित्य को अंततः एक लंबी लड़ाई के बाद हिंदी में अनुमोदित किया गया था, दलित साहित्यकार अभी भी उस लेखन को वर्गीकृत करते हैं जो दलित साहित्य के रूप में आत्म-साक्षात्कार पर जोर देता है। युवा दलित लेखक रामचंद्र का दावा है कि एक दलित विचारक और दलित लेखक वह है जो बुद्ध और बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर की विनम्रता, समाधि और ज्ञान पर अपने विश्वासों को आधार बनाता है। समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व सभी लेखन, सोच और चिंतन का केंद्र बिंदु होना चाहिए। ये मानक

परिवर्तनकारी दृष्टि के लिए एक पूर्वापेक्षा है, न कि फतवा। रामचंद्र ने अपने काम "समकालीन हिंदी दलित प्रवचन" में दिखाया है कि आधुनिक सेटिंग्स में, कुछ मुसलमानों और दलित वर्गों के कर्मचारियों और अधिकारियों की एक बड़ी संख्या को लामबंद करके, दलित जागरूकता हिंदी बेल्ट में फैली हुई है।

गौतम बुद्ध, ज्योतिबा फुले, डॉ अम्बेडकर, और अन्य प्रभावशाली हस्तियों ने 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मुक्ति संग्राम में प्रवेश किया। हिंदी में बसपा नहीं है, एक ऐसा तथ्य जिसे दलित लेखक और दार्शनिक स्वीकार कर भी सकते हैं और नहीं भी। पहले से मौजूद जागृति की चिंगारी तेज दस्तक से जगमगा उठी थी। इस परिस्थिति ने दलित विमर्श को व्यापक बनाया है और संवाद की हिमायत को बढ़ाया है।

मौका मिलने के बाद डॉ. अम्बेडकर का मुक्ति के लिए क्रांतिकारी अभियान और जागरूकता की लहर चल पड़ी है. यद्यपि हिंदी में राजनीतिक टिप्पणी को दलित प्रवचन का अनन्य स्रोत नहीं माना जा सकता है, दलित शिक्षित लोगों की बुद्ध और डॉ अम्बेडकर के लेखन तक पहुंच है। रचनाकार वहाँ थे और साथ ही जागरूकता की लहर जो पहले से ही हिलना शुरू हो गई थी। हालाँकि, जागरूक दलित आविष्कारकों को गैर-दलित दार्शनिकों या मीडिया के आंकड़ों से कोई विशेष ध्यान नहीं मिला। लेकिन चीजें अब बदल गई हैं।

सत्ता की राजनीति ने प्रवचन की स्थिति में सुधार किया है। पिछले 15 वर्षों के दौरान बड़ी संख्या में दलित लेखक सामने आए हैं और उनके उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। वैचारिक कार्यों में चंद्रभान प्रसाद द्वारा दलित डायरी, शरण कुमार लिंबाले द्वारा दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र, ओम प्रकाश वाल्मीकि द्वारा दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र, कबीर के आलोचक, कबीर के कुछ अन्य आलोचक, और बहुत कुछ शामिल हैं। कबीर और रामानंद: किंवदंतियां, सूत ना कप, कबीर: बाज भी कपोत भी पहे भी, मुंशी प्रेमचंद, एक सामंती शासक, मुंशी प्रेमचंद की नीली आंखें, डॉ धर्मवीर, खास खुशी क्यूं होय, और संत रैदास सभी थे। डॉ. प्रोजेक्टेड (कंवल भारती) द्वारा विचार किया गया, दलित कहाँ जाते हैं, अम्बेडकर विरोधियों (मोहनदास नैमिष राय) के चक्रव्यूह में, दलित साहित्य निर्माण के संदर्भ में (डॉ. चामा), अम्बेडकर 21वीं सदी में (डॉ. रघुवीर सिंह), अम्बेडकर का हिंदी दलित पत्रकारिता पर प्रभाव (डॉ. श्योराज सिंह "द रेस्टलेस"), लोकतंत्र में दलित भागीदारी का प्रश्न, दलित प्रवचन की भूमिका वैचारिक पुस्तकों की तरह, कहानी संग्रह भी हैं, जैसे पुनर्वास (विपिन बिहारी), समकालीन दलित कहानियां (नं. कुसुम वियोगी), लोकप्रिय दलित कहानियां (नं. कुसुम वियोगी), आवाजें (मोहनदास नैमिष राय), देवता आदमी (शरण कुमार लिंबाले), भाग की रोटी (शत्रुघ्न कुमार), दलित अंतरावंद (स्वरूप चंद बौद्ध), दलित जीवन कहानियां (गिरिराज शरण),

दलित कहानियों के समान, प्रमुख दलित साहित्य में छपर (जयप्रकाश कर्दम), पहला खत (डॉ धर्मवीर), अमर ज्योति (डी.पी. वरुण), बंधन मुक्त (रामजीलाल सहायक), जस तस भाई कृपाण (सत्यप्रकाश), मुक्ति वर्ग (मोहन दास) शामिल हैं।), मिट्टी का सौगंध (प्रेम कपाड़िया), प्रस्थान (दलितों की पर आत्मकथाएँ भी व्यापक रूप से पढ़ी जाती हैं। अछूत (दया पवार), अक्करमशी (शरण कुमार लिंबाले), जीवन हमारा (बेबी कांबले), उचक्का, उचगीर, छोरा कोल्हारी का (किशोर) शांताबाई काले), पराया (लक्ष्मण माने), भूले हुए दिन (अरुण खोरे), नर्क की सफाई (अरुण ठाकुर/मुहम्मद खादस), त्राल-अंतराल (शंकर राव खरात),

आत्मकथा की तरह हिन्दी काव्य भी दलित साहित्य का महत्वपूर्ण अंग रहा है। ऐसे में आपकी निष्ठा क्या होती? ओम प्रकाश वाल्मीकि के अनुसार, माता प्रसाद द्वारा एकलव्य, मोहन दास नैमिष राय द्वारा अग्नि और आंदोलन, डॉ एन सिंह द्वारा सतह से उठ रहे चेतना के स्तर, दयानंद बट्रोही द्वारा अत्याचार की आंखें, मलखान सिंह द्वारा ब्राह्मणों को सुनें , ईश कुमार गंगनिया द्वारा हार नहीं मानेंगे, कुसुम वियोगी द्वारा टुकड़े टुकड़े नृत्य, परिजनों सुदेश तंवर की कविताएँ यह मेरी है, चिरंगी लाल कटारिया द्वारा शब्द थक गए हैं, पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी द्वारा प्रश्नों का सूर्य, भावना से अभिव्यक्ति तक विपिन द्वारा बिहारी, पदचिन्ह रजनी तिलक, बिरसा बाई जिया लाल आर्य, पुश्तैनी दर्द तेजपाल सिंह तेज, दलित पचासा एसआर विद्रोही, द अंबेडकर सेंचुरी सोहनपाल सुमनक द्वारा वैचारिक और साहित्यिक कार्यों के साथ, दलित प्रवचन से संबंधित निम्नलिखित पत्रिकाएँ भी मुद्रित की जाती हैं : राजेंद्र यादव के हंस, रमनिका गुप्ता के युद्धरत आम आदमी, जय प्रकाश कर्दम के दलित साहित्य, तेज सिंह की अपेक्षा, दयानाथ निगम के अंबेडकर इन इंडिया, मूक नायक का आश्वासन, मोहन दास नैमिष राय का सामाजिक न्याय मुझे ऋषि, अवंतिका प्रसाद मरमत के पूर्व देव, आदि।

ग्रंथ सूची:

01. ओमप्रकाश वाल्मीक, "दलित साहित्य के सौंदर्यशास्त्र", पी। नंबर 142

02. डॉ. पूरनमल "दलित संघर्ष और सामाजिक न्याय" पृ. नंबर 105

03. सेहन लाल सिग्नेचर "दलित लिटरेचर" पृ. नंबर 90

04. हिंदी दलित साहित्य संपादक- यज्ञ प्रसाद तिवारी पृ. नंबर 18

05. हिंदी समकालीन साहित्य में दलित चेतना निबंध: डॉ उमाशंकर तिवारी पी। नंबर 54

06. पृथ्वी आपका धन नहीं है: जगदीशचंद्र पी। नंबर 19